प्रश्न 1—ज्ञान के वर्गीकरण एवं विकास को स्पष्ट कीजिए।

Elucidate classification and development of knowledge.

अथवा **"मानवीय समाज के ऐतिहासिक वर्धन में ज्ञान के वर्गीकरण एवं विकास का महत्त्वपूर्ण स्थान है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।**

"Classification and development of knowledge has an importent place in the historical growth of human Society." Examine this statement.

उत्तर—ज्ञान मानवता की मौलिक पहचान है। एक ओर ज्ञानार्जन को मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ एवं पवित्र कर्म माना गया है तो दूसरी ओर अज्ञानता को घोर शत्रु के रूप में विवेचित किया गया है। श्रीमद् भागवद गीता के अनुसार, "न हि ज्ञानेन सद्दशं व पवित्र मिह विद्यते" (अर्थात् इस संसार में ज्ञान के जैसा और पवित्र कुछ भी नहीं है)। साथ ही, आधुनिक अंग्रेजी के पितामह शेक्सपीयर (Shakespear) का मत है, "Ignorance is darkness" (अर्थात् अज्ञान ही अंधकार है)। मनुष्य के निमित्त ज्ञान के महत्त्व को रेखांकित करते हुए एक अन्य प्रसिद्ध अंग्रेज कवि एवं दार्शनिक बेकन का कहना है, "Knowledge is power" (अर्थात् ज्ञान ही शक्ति है)। इसी क्रम में प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो का भी कथन है, "अज्ञानी रहने से जन्म न लेना ही अच्छा है, क्योंकि अज्ञान ही समस्त विपत्तियों का मूल है।" मानवी संदर्भ में ज्ञान एवं अज्ञान की तुलना करते हुए सर डब्लू० टेम्पिल ने स्पष्ट किया है, "ज्ञान ही मनुष्य का परम मित्र है और अज्ञान ही परम शत्रु है।" मनुष्य के विकास में ज्ञान एवं अज्ञान की इस शाश्वत् तुलना के महत्त्व को मानवीय सभ्यता के प्रारम्भ में ही वेद भगवान् ने आदेश दिया है, "आरोह तमसो ज्योतिः" (अर्थात् अज्ञानान्धकार से निकल कर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ो)। मानव ने भी वेद के इस आदेश का अक्षरतया पालन करते हुए ज्ञानार्जन में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी है। इसके परिणामस्वरूप, मानवीय विकास के ऐतिहासिक विकास के साथ-साथ ज्ञान का भी निरंतर विकास होता गया है। वस्तुतः मानवीय जीवन के विकास का प्रमुख आधार ज्ञान का बहुमुखी विस्तार ही है। ज्ञान के इस बहुमुखी विस्तार से जहाँ एक ओर मानव का जीवन अधिक सुगम एवं आरामदायक होता गया है वहीं दूसरी ओर ज्ञान के वर्गीकरण की समस्या भी निरन्तर जटिल से जटिलतर हुई और ज्ञान के वर्गीकरण की आवश्यकता प्रबल होती गयी।

Scanned with CamScanner

(Classification of Knowledge)

ज्ञान के बहुमुखी विस्तार से उत्पन्न हुई समस्या के निवारण हेतु विद्वानों द्वारा ज्ञान का वर्गीकरण किया जाने लगा। ज्ञान के वर्गीकरण का उद्देश्य अथाह ज्ञान को इस प्रकार सुव्यवस्थित करना है कि मानवीय विकास के विभिन्न पहलुओं को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में जबकि समान पहलुओं को एक साथ एकत्रित किया जाये, जिससे कि ज्ञान का मनचाहा एवं आवश्यकतानुसार उपयोग एवं उपभोग सरल व संभव हो सके।

हिन्दी का शब्द वर्गीकरण अंग्रेजी के शब्द 'Classification' का हिन्दी रूपान्तरण है। प्राचीन रोम में 'क्लासीफिकेशन' शब्द का प्रयोग दासों को उनके गुण एवं उपयोग के आधार पर श्रेणीबद्ध करने के लिए किया जाता था। इसी क्रम में कालान्तर में वस्तुओं को भी उनकी सदृश्यता के आधार पर 'वर्गों' मे रखा जाने लगा। इस प्रकार, साधारणत: 'वर्ग' शब्द का तात्पर्य सदृश वस्तुओं के समूह अथवा विभाग से है। इस प्रकार, वर्ग के अन्तर्गत एकत्र प्रत्येक वस्तु में कम से कम एक अथवा अनेक सामान्य विशेषता/विशेषताएं होती है। यहाँ यह स्पष्ट किया जाना भी महत्त्वपूर्ण है कि वर्ग चिरस्थायी एवं परिवर्तनीय न होते हुए भी उपयोगी एवं विकासात्मक होता है। पारिभाषिक रूप से **सेयर्स** के मतानुसार, "वर्ग हमारे प्रत्यक्षीकरण एवं तर्कशक्ति का अभ्यास है। जिसके आधार पर हम वस्तुओं को किसी सादृश्य के अनुसार एक क्रम में रखते हैं। और भिन्नता के अनुसार उन्हें एक-दूसरे से पृथक् करते हैं।"

आदिकाल से ही मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी रहा है और अपने इसी गुण के कारण सतत ज्ञानार्जन में संलग्न रहा है परिणामस्वरूप ऐतिहासिक धरातल पर ज्ञान का विकास निरंतर होता रहा है। सभ्यता के शैशवकाल मे मनुष्य के पास ज्ञान का संचय कम था। समय के साथ इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई है। इसलिए प्रारम्भ में ज्ञान को कम वर्गों में वर्गीकृत किया गया। उदाहरणत: वैदिक काल में केवल चार वेदों में ही समस्त ज्ञान का भण्डार मान लिया गया। तदुपरांत जैसे-जैसे ज्ञान का विस्तार होता गया ज्ञान को अधिकाधिक वर्गों में वर्गीकृत किया जाने लगा। जैसा कि ज्ञान वस्तुओं से भिन्न वैचारिक अनुभूतियां है, इसलिए ज्ञान को वस्तुओं से भिन्न प्रकार से ही वर्गीकृत भी किया गया है और इसके लिए निम्न प्रकार से **वैचारिक क्रम** (Idea Plane) का निर्माण किया गया–

(1) विशेषता (Canon of Characteristics)–इसके अंतर्गत निहित गुणों के आधार पर ज्ञान का वर्गीकरण किया जाता है। इसके उपसूत्र है–(अ) **पृथक्करण** (Differentiation), (आ) **संलग्नता** (Concomitance), (इ) **सम्बद्धता** (Relavance), (ई) **निर्धार्यता** (Ascertainability), (ए) **सम्बद्ध अनुक्रम** (Relevant Sequence) एवं (ऐ) **अनुरूपता** (Consistancy)।

(2) वर्ग-विन्यास (Canon of Gradation)–इसके अंतर्गत निहित गुणवत्ता अर्थात् मानवीय संदर्भ में महत्ता के आधार पर ज्ञान का वर्गीकरण किया जाता है। इसके उपसूत्र हैं–(अ) **निकास/रेचन** (Exhaust), (आ) **पृथक्करण** (Exclusiveness), (इ) **सहायक अनुक्रम** (Helpful Sequence) एवं (ई) **अनुरूप क्रम** (Consistent)।

(3) वर्ग-शृंखला (Canon of Chain Classes)–इसके अंतर्गत समावेशी अथवा असमावेशी गुण-क्रम के आधार पर ज्ञान का वर्गीकरण किया जाता है। इसके उपसूत्र हैं–(अ) **विस्तार ह्रास** (Decreasing Extension) एवं (आ) **समावेशकता** (Modulation)।

(4) संसर्ग अनुक्रम (Filiatory Sequence)–इसके अंतर्गत विभिन्न विषयों के मध्य पारस्परिक साम्य-सम्बन्ध के अनुसार ज्ञान का वर्गीकरण किया जाता है। इसके उपसूत्र हैं–(अ) **अधीनस्थ वर्ग** (Subordinate Classes) एवं (आ) **समकक्ष वर्ग** (Cordinate Classes)।

जटिल ज्ञान को वर्गीकृत करने की उपरोक्त पद्धति का अनुपालन करते हुए सम्पूर्ण जगत के ज्ञान को सर्वप्रथम निम्न तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है–

	क्षेत्र	ज्ञान
1.	मनुष्य एवं प्रकृति (Man and Nature)	प्राकृतिक शास्त्र (Natural Science)
2.	मनुष्य एवं स्वयं (Man and Self)	मानविकी (Humanities)
3.	मनुष्य एवं समाज (Man and Society)	सामाजिक शास्त्र (Social Science)

मनुष्य का प्रथम सम्पर्क प्रकृति से होने के कारण उसने प्रकृति का अध्ययन किया। इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक शास्त्रों की उत्पति हुई। प्रकृति का अध्ययन करने के पश्चात् मनुष्य ने स्वयं का तथा अन्य मनुष्यों का अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप मानविकी विषयों की उत्पत्ति हुई। जैविक प्राणी होने के साथ-साथ मनुष्य के एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य के लिए अधिक समय तक एकाकी रहकर स्वयं के सम्बन्ध में सोचना सम्भव नहीं हो सका। इसलिए मनुष्य ने समाज का अध्ययन किया और इस प्रकार सामजिक शास्त्रों की उत्पत्ति हुई। इन तीनों प्रकार के शास्त्रीय ज्ञान को ही सम्मिलित रूप में 'ज्ञान जगत' (Universe of Knowledge) के रूप में संकलित किया गया है।

ज्ञान जगत का विकास
(Development of Universe of Knowledge)

ज्ञान जगत का विकास से पूर्व इसकी कतिपय विशेषताओं को जानना उचित होगा। इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं–(1) ज्ञान जगत् असीमित है एवं (2) ज्ञान जगत् सर्वव्यापी है।

ज्ञान जगत के अन्तर्गत समस्त ज्ञान भूत, वर्तमान एवं भविष्य का समावेश किया जाता है। भूतकालीन ज्ञान को सुरक्षित रखा जाता है; वर्तमान ज्ञान का अनुसरण किया जाता है तथा भविष्य के ज्ञान का प्रवर्धन किया जाता है। ज्ञान जगत् का समस्त दिशाओं में निरन्तर विकास होता है। इसका विकास मनुष्य की इच्छा पर निर्भर न होकर कतिपय सिद्धान्तों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत कुछ निश्चित विधियाँ तय की गई हैं। इसके अतिरिक्त ज्ञान जगत् का विकास एक समय विशेष पर न होकर धीरे-धीरे हुआ है तथा इसका आकार बहुघातीय होने के कारण चिर सक्रिय रहा है। डॉ० रंगानाथन ने अपनी पुस्तक '*प्रोलेगोमेना*' में कुछ क्रियाओं का वर्णन किया है, जिसके अनुसार, ज्ञान जगत् का विकास अर्थात् नवीन वर्गों का निर्माण होता है। ये हैं–(1) पृथक्करण (Dissection), (2) विच्छेन (Demudation), (3) स्तरण (Lamination), (4) अबद्ध विषय-संग्रह (Loose Assemblage) एवं (5) अध्यारोपण क्रिया (Super Imposition)। इन क्रियाओं की व्याख्या निम्न प्रकार से की गई है–

(1) पृथक्करण क्रिया (Act a Dissection)– इस विधि के अन्तर्गत सत्वों के जगत को समान श्रेणी के वर्गों से पृथक् कर दिया जाता है। इन पृथक्कृत वर्गों को समवर्ग तथा उनकी पंक्ति को 'वर्गों की पंक्ति' कहा जाता है। एक विशेषता के आधार पर किसी वर्ग अथवा विषय

Scanned with CamScanner

का उपवर्गों तथा विशिष्ट विषयों में निर्माण किया जाता है। पृथक्करण करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि निर्मित वर्गों की सीमा-रेखा एक-दूसरे से पृथक् है। जैसे—ज्ञान जगत् में प्राणधारियों को विभिन्न विषयों में इस प्रकार रखा जा सकता है→(1) वनस्पति विज्ञान (Botany), कृषि विज्ञान (Agriculture) एवं जीव विज्ञान (Zoology) जबकि वनस्पति विज्ञान के मुख्य वर्ग में पौधों को इस प्रकार पृथक् किया जा सकता है→(2) फूल वाले पौधे (Flowering plants) एवं बिना फूल वाले पौधे (Non flowering plants)। पृथक्करण क्रिया द्वारा मूल विषयों अथवा विशिष्ट विषयों को निर्मित किया जाता है। इस प्रकार निर्मित प्रत्येक मूल अथवा विशिष्ट विषय स्वयं में एक जगत् हो जाता है तथा पुनः उसका पृथक्करण किया जा सकता है।

(2) विच्छेदन क्रिया (Act of Demudation)-इस क्रिया के अन्तर्गत किसी मूल विषय का विच्छेदन करने पर जो विषय प्राप्त होते है, उनका विस्तार कम होता है तथा गहनता बढ़ती जाती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि विच्छेदन द्वारा हम सामान्य से विशेष की ओर अग्रसर होते है। इस प्रकार शृंखला की कड़ियों का निर्माण होता है। जैसे—भौगोलिक क्षेत्र में विच्छेदन को इस प्रकार से किया जा सकता है—विश्व→एशिया→भारत→कोलकाता।

विच्छेदन क्रिया द्वारा निर्मित शृंखला में कड़ियों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है तथा प्रत्येक कड़ी अपने से उच्च कड़ी में सम्मिलित रहती है।

(3) स्तरण क्रिया (Act of Lamination)-इस क्रिया द्वारा एक पक्ष के ऊपर दूसरा पक्ष रख कर एक मिश्रित विषय का निर्माण किया जाता है। इसके अन्तर्गत जब मूल विषय के ऊपर एकल विचार रख दिया जाता है, तब मिश्रित विषय का निर्माण होता है। इस प्रकार निर्मित विषय सूक्ष्म विषय हो जाता है। उदाहरणार्थ—मूल विषय कृषि में एकल विचार (Isolate) अनाज का स्तरण करके अनाज कृषि (मिश्रित विषय) का निर्माण निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

कृषि (Agriculture) + अनाज (corn)= अनाज कृषि (Agriculture of corn)। इसी भांति—भारत (India) + कृषि (Agriculture) = भारतीय कृषि (Indian Agriculture)।

इस प्रकार मूल विषय अथवा मुख्य वर्ग के साथ एक एकल अथवा पक्ष जोड़ कर विशिष्ट विषय का निर्माण किया जा सकता है। स्तरण क्रिया का प्रयोग परिगणनात्मक वर्गीकरण में सम्भव नहीं है, किन्तु पक्षात्मक वर्गीकरण में पक्ष विश्लेषण की व्यवस्था होने के कारण स्तरण-प्रक्रिया का व्यापक प्रयोग किया जा सकता है।

(4) अबद्ध विषय संग्रह (Act of Loose Assemblage)—इस क्रिया द्वारा विभिन्न वर्गों को परस्पर जोड़ दिया जाता है। जैसे—राजनीतिशास्त्र (Political Science) + समाजशास्त्र (Sociology) = राजनीतिक समाजशास्त्र (Political Sociology)। इस प्रकार से उत्पन्न हुए विषय उपयोगिता विशेषताओं के होते है अर्थात् इनमें अबद्ध किये गये सभी विषयों की विशेषताएँ होती है। इसलिए इनका महत्त्व अबद्ध सभी विषयों के लिए एक समान होता है।

(5) अध्यारोपण क्रिया (Super Imposition)—किसी एक विषय के गुणों को किसी दूसरे विषय पर आरोपित करने से भी नवीन विषय का निर्माण होता है। जैसे—प्राकृतिक जीवन शैली में चिकित्सा के गुणों का अध्यारोपण करने से प्राकृतिक चिकित्सा नामक नवीन विषय का निर्माण होता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि ज्ञान मानवीय समाज के विकास की धुरी है। ज्ञान का वर्धन नवीन विषयों के विकास से होता है जबकि ज्ञान के विषयगत अध्ययन की व्यवस्था निर्माण हेतु ज्ञान के वर्गीकरण की अपरिहार्य आवश्यकता होती है।

प्रश्न 2—वर्गीकरण का समाजशास्त्र के संदर्भ में अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी विषयगत सम्बद्धता पर प्रकाश डालिए।

Elucidate the meaning of classification in reference to Sociology and throw light on its subjective relevance.

अथवा समाजशास्त्र में वर्गीकरण विषय की सारगर्भित विवेचना कीजिए।

Examine classification of Sociology in detail.

उत्तर—प्रत्येक अध्ययन विषय अध्ययन सामग्री अर्थात् अपनी विषय-वस्तु का वर्गीकरण करता है। वर्गीकरण से सामग्री अधिक बोधगम्य एवं अध्ययन के लिए सुविधाजनक हो जाती है। यह ऐसे ही है जैसे भवन बनाने के लिए एकत्रित सामग्री सीमेंट, ईंट, सरिया, रेत, रोड़ी आदि को भिन्न-भिन्न ढेर में रखा जाना। इसके विपरीत यदि सभी को एक ही ढेर में रख दिया जायेगा तो भवन बनाने के कार्य में इतनी जटिलताएं उत्पन्न हो जायेगी कि सुचारु रूप से भवन निर्माण का कार्य ही नहीं हो पायेगा। इसी प्रकार समाजशास्त्र में भी विस्तृत विषय सामग्री के वर्गीकरण की आवश्यकता पड़ती है। समाजशास्त्र में प्रमुख रूप से विभिन्न प्रकार के समाजों एवं सामाजिक समूहों का वर्गीकरण किया गया है। एक सामाजिक विषय होने के कारण समाजशास्त्र की विषय सामग्री अत्यधिक परिस्थितिजन्य (Situational) एवं अति-व्यापी (Overlapping) है और साथ ही निरंतर परिवर्तनशील भी है। ऐसे में यद्यपि समाजशास्त्र में विषय सामग्री के वर्गीकरण अधिक सन्तोषजनक नहीं है, किन्तु इनसे अध्ययन अधिक सुविधाजनक अवश्य हुआ है। समाजशास्त्रियों ने समाज एवं सामाजिक समूहों को अपने-अपने दृष्टिकोणों के अनुसार विभाजित किया है। प्रारम्भ में अधिकांश विद्वानों ने समाज का द्वैत वर्गीकरण किया अर्थात् इसे दो श्रेणियों में विभाजित किया, परन्तु जैसे-जैसे विषय का विकास होता जा रहा है वैसे-वैसे वर्गीकरण भी बहु-श्रेणियों में एवं यौगिक होता जा रहा है।

वर्गीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Classification)

सामग्री के वर्गीकरण में एकसमान विशेषताओं वाले तथ्यों को एक समूह के अन्तर्गत रखा जाता है तथा भिन्न विशेषताओं वाले तथ्यों को दूसरे समूह में। उदाहरणस्वरूप—यदि पुरुषों को एक वर्ग में रखा जायेगा तो महिलाओं को दूसरे वर्ग में। इस प्रकार वर्गीकरण के अंतर्गत तथ्यात्मक आधार सामग्री का ढेर विभिन्न समान गुणों वाले विशिष्ट वर्गों में परिणत हो जाता है। वर्गीकरण को विभिन्न विद्वानों ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है—

(1) कॉनर (Connor) के कथनानुसार, "वर्गीकरण तथ्यों को उनकी समानताओं तथा निकटता के आधार पर समूहों तथा वर्गों में क्रमबद्ध करने तथा व्यक्तिगत इकाइयों की भिन्नता के मध्य पाये जाने वाले गुणों की एकात्मकता को प्रकट करने की एक प्रक्रिया है।"

(2) एलहांम (Elhance) के कथनानुसार, "सादृश्यताओं व समानताओं के अनुसार सामग्री को समूहों या वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को तकनीकी दृष्टि से वर्गीकरण कहा जा सकता है।"

(3) हरिकृष्ण रावत (Harikrishan Rawat) के कथनानुसार, "तथ्य-विश्लेषण की एक प्रक्रिया वर्गीकरण के नाम से जानी जाती है, जिसमें संकलित तथ्यों को कुछ समूहों में बाँटकर

Scanned with CamScanner

उनका समूहीकरण किया जाता है। वर्गीकरण किसी गुण अथवा चर (परिवत्य) आधारित हो सकता है। गुण आधारित वर्गीकरण किसी गुण विशेष की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के आधार पर किया जाता है। चर, जैसे–बेरोजगारी, शिक्षा आदि पर आधारित वर्गीकरण में तथ्यों का विभाजन चरों के आधार पर किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि वर्गीकरण एकत्रित सामग्री का समान गुणों के आधार पर विभिन्न वर्गों अथवा श्रेणियों में विभाजन करने की प्रक्रिया है, जिससे सामग्री को व्यवस्थित करके निष्कर्ष निकालने में सहायता मिल सके। वस्तुत: यह सांख्यिकी के प्रयोग का वह पहला चरण है जो आधार सामग्री को सांख्यिकी क्रियाओं के लिए स्वरूप प्रदान करता है और अध्ययन को अधिक से अधिक बोधगम्य बनाता है।

वर्गीकरण की विशेषताएँ
(Characteristics of Classification)

वर्गीकरण के आधार पर एकत्रित सामग्री को श्रेणीबद्ध करके बोधगम्य बनाया जाता है। एक अच्छे वर्गीकरण में निम्न प्रमुख विशेषताएँ होती हैं–

(1) वर्गीकरण स्पष्ट होना चाहिए (Classification Should be Clear)–वर्गीकरण का उद्देश्य सामग्री को व्यवस्थित करना है ताकि इससे अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकें तथा इसे दूसरों के समझने योग्य बनाया जा सके। इसलिए इसकी सर्वप्रथम विशेषता इसका स्पष्ट होना है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिन श्रेणियों अथवा वर्गों में हम सामग्री का विभाजन करने जा रहे हैं, वे पूर्णत: स्पष्ट होने चाहिएं।

(2) विभिन्न वर्ग एक-दूसरे से भिन्न होने चाहिएं (Different Categories Should be Mutually Exclusive)–विभिन्न वर्गों की स्पष्टता के साथ-साथ वर्ग अथवा श्रेणियाँ पूर्णत: एक-दूसरे से भिन्न होनी चाहिएं अर्थात् प्रत्येक वर्ग का निर्धारण भिन्न-भिन्न विशेषताओं के आधार पर किया जाना चाहिए ताकि एक वस्तु को एक ही वर्ग अथवा श्रेणी में रखा जा सके। यदि किसी एक वस्तु को एक से अधिक श्रेणियों में रखा जा सकता है तो वह वर्गीकरण वास्तव में वर्गीकरण ही नहीं है।

(3) वर्गीकरण का आधार एक होना चाहिए (Classification Should be Based on One Principle)–वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया जा सकता है, परन्तु वही वर्गीकरण एक अच्छा वर्गीकरण कहलाता है जोकि एक नियम पर आधारित है अर्थात् समानताएँ या भिन्नताएँ सामग्री के किसी एक गुण से सम्बन्धित है। उदाहरण के लिए, यदि कक्षा के छात्रों का वर्गीकरण करना है तो अनेक आधारों (यथा–आयु, लिंग, भार, ऊँचाई, शिक्षा में निपुणता आदि) में से एक समय पर एक ही आधार चुना जाना चाहिए। इतना हो सकता है कि दूसरे आधार पर प्रमुख श्रेणियों का उपवर्गीकरण कर लिया जाए। यदि वर्गीकरण का एक ही आधार है तो एक वर्ग की इकाइयों में सजातीयता होगी।

(4) वर्गीकरण में स्थायित्व होना चाहिए (Classification Should Have Stability)–एक अच्छा वर्गीकरण वह है जिसका स्थायी महत्व है क्योंकि यदि इसमें स्थायित्व नहीं है अर्थात् कभी एक आधार पर तथा कभी दूसरे आधार पर वर्गीकरण किया गया है तो तथ्यों की तुलना सम्भव नहीं हो सकेगी।

(5) वर्गों अथवा श्रेणियों की संख्या उपयुक्त होनी चाहिए (Number of Classes or Categories Should be Appropriate)–वर्गीकरण की श्रेणियाँ कितनी होनी चाहिएं? इसके बारे में निश्चित रूप से कहना कठिन कार्य है। एक अच्छे वर्गीकरण की श्रेणियाँ सामग्री की विविधता तथा संख्या एवं वर्ग विस्तार को सामने रखकर सुनिश्चित की जानी चाहिएं। वर्गों अथवा श्रेणियों की संख्या के साथ-साथ वर्गों में विभाजित इकाइयों की संख्या का भी ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि ऐसा न हो जाए कि दो वर्गों में से एक में तो 95 प्रतिशत इकाइयाँ आ जाएँ तथा दूसरे में केवल 5 प्रतिशत ही रहें। ऐसे वर्गीकरण सामग्री के विश्लेषण में अधिक सहायक नहीं होते।

(6) वर्गीकरण सर्वांगीण होना चाहिए (Classification Should be Exhaustive)–वर्गीकरण की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह है कि वर्गीकरण सर्वांगीण या नि:शेष होना चाहिए अर्थात् कोई भी इकाई ऐसी नहीं बचनी चाहिए जिसे किसी न किसी श्रेणी में न रखा जा सके। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न वर्गों की इकाइयों का कुल योग सम्पूर्ण सामग्री के कुल योग के बराबर होना चाहिए।

(7) वर्गीकरण में परिवर्तनशीलता होनी चाहिए (Classification Should be Changeable)–स्थायित्व होने के साथ-साथ वर्गीकरण में परिवर्तनशीलता का अंश भी पाया जाना अनिवार्य है जिससे अगर इसे नवीन परिस्थितियों में लागू किया जाए तो यह सरलता से अनुकूलन कर सके। वास्तव में कोई भी वर्गीकरण आज के परिवर्तनशील युग में सदा के लिए स्थायी नहीं हो सकता तथा इसमें थोड़ा-बहुत लचीलापन होना अनिवार्य है।

समाजशास्त्र में वर्गीकरण की सम्बद्धता
(Relevance of Classification In Sociology)

समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है अर्थात् एक सामाजिक विज्ञान है, जबकि समाज सामाजिक सम्बन्धों का ताना-बाना। समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रवृत्ति अन्य सामाजिक विज्ञानों के सादृश्य समाजशास्त्रीय अध्ययनों में तुलनात्मकता को बढ़ाने एवं सांख्यिकीय प्रयोग को सुगम बनाने के लिए वर्गीकरण को प्रोत्साहित करती है, साथ ही सामाजिक सम्बन्धों की जटिलता अध्ययन की सरलता एवं बोधगम्यता को बढ़ाने के लिए वर्गीकरण की आवश्यकता को निर्धारित करती है। दूसरे शब्दों में पद्धति एवं विषय-वस्तु दोनों ही स्तरों पर समाजशास्त्र वर्गीकरण की सम्बद्धता को उजागर करता है। समाजशास्त्र में वर्गीकरण की यह सम्बद्धता निम्न प्रकार देखी जा सकती है–

(1) अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक बनाना. (To Make the Study More Scientific)–वर्गीकरण समाजशास्त्रीय अध्ययनों को अधिक वैज्ञानिक बनाता है। वर्गीकरण के पश्चात् ही सामग्री को सांख्यिकीय प्रयोग के लिए उपयुक्त बनाया जा सकता है। वास्तव में वर्गीकरण सांख्यिकी का प्रथम चरण है और सांख्यिकी के प्रयोग से ही समाजशास्त्र सहित किसी भी सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

(2) अध्ययन सामग्री को तुलना योग्य बनाना (To Make the Study Material More Comparable)–वर्गीकरण से अध्ययन सामग्री तुलना योग्य बन जाती है। सामाजिक विज्ञानों में तुलनात्मक पद्धति एक श्रेष्ठ अनुसंधान पद्धति है। तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग की पूर्व

Scanned with CamScanner

दशा सामग्री का वर्गीकरण है। समाजशास्त्र तुलनात्मक पद्धति को प्रयोग करने वाला एक प्रमुख सामाजिक विज्ञान है। इसलिए समाजशास्त्र में वर्गीकरण को एक बड़ी आवश्यकता एवं वास्तविकता के रूप में देखा जाता है।

(3) अध्ययन सामग्री को अधिक बोधगम्य बनाना (To Make the Study Material More Perceptible)—वर्गीकरण से अध्ययन सामग्री को अधिक बोधगम्य बनाया जाता है। अन्य सामाजिक विज्ञानों के सादृश्य समाजशास्त्र की अध्ययन सामग्री अत्यधिक जटिल एवं उलझी हुई होती है। वर्गीकरण इसकी जटिलता को दूर कर अधिक से अधिक व्यवस्थित एवं बोधगम्य बना देता है।

(4) सिद्धान्तों के निर्माण में सुगमता (Easy in Construction of Theories)—वर्गीकरण सिद्धान्तों के निर्माण में व्यवस्था एवं पूर्व दशाओं का निर्माण करता है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है, इस युग में विषय का विकास वैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत बने सिद्धान्तों से होता है। सामाजिक विज्ञानों में वर्गीकरण वैज्ञानिक पद्धति की पूर्व दशा है और इसी आधार पर वैज्ञानिक सिद्धान्तों का निर्माण होता है।

(5) विषय की व्यवहारिकता को बढ़ाने में सहायक (To Helpful in Increasing Subject Practicability)—वर्गीकरण विषय की दुरूहता को समाप्त कर उसे सरल बना देता है, इससे विषय के व्यवहारिक प्रयोग में बढ़ोत्तरी होती है। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है और सैद्धान्तिक होने के साथ-साथ अत्यन्त व्यवहारिक भी है। समाजशास्त्र नित्य ऐसे उपाय ढूंढता और अपनाता रहता है जिससे इसका व्यवहारिक उपयोग अधिक से अधिक हो सके। इसलिए वर्गीकरण समाजशास्त्र के लिए अत्यधिक आवश्यक एवं उपयोगी है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि विषय सामग्री को समानताओं एवं विषमताओं के आधार पर श्रेणीबद्ध करना वर्गीकरण है, जो कि विषय को व्यवस्थित एवं बोधगम्य स्वरूप प्रदान कर न केवल इसकी वैज्ञानिकता को बढ़ाता है वरन् सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक क्षेत्र में विषय के विकास के लिए उपयोगी है। इस परिप्रेक्ष्य में अन्य सामाजिक विज्ञानों सहित समाजशास्त्र की वर्गीकरण से पूर्ण सम्बद्धता है।

प्रश्न 3—समाज की परिभाषा दीजिए। समाज तथा एक समाज में अंतर स्पष्ट करते हुए समाजों का वर्गीकरण कीजिए।

Define society. Classify societies while differentiating the society and a society.

अथवा **"समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक मकड़जाल है।" इस कथन की विवेचना समाजों के वर्गीकरण के आलोक में प्रस्तुत कीजिए।**

"Society is a web of social relations." Examine this statement in the light of classification of societies.

उत्तर—सामान्य रूप से समाज (Society) शब्द से प्रत्येक व्यक्ति परिचित है। वस्तुतः यह एक अत्यधिक प्रचलित शब्द है जिसका प्रयोग साधारण बोलचाल की भाषा में व्यक्तियों के समूह अथवा संकलन के लिये किया जाता है। उदाहरणार्थ, 'आर्यसमाज', 'ब्रह्म समाज', जाति समाज, जनजाति समाज, 'महिला समाज' तथा 'बाल समाज' आदि शब्दों का प्रयोग हम इन्हीं अर्थों में करते हैं, परन्तु समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग इस अर्थ में न होकर विशिष्ट अर्थों में प्रयुक्त होता है। समाजशास्त्रीय लेखन में भी इस अवधारणा का प्रयोग अनेक अर्थ एवं संदर्भ में प्रचुर मात्रा में हुआ है। इसलिए इसकी परिभाषा एवं व्याख्याओं के सम्बन्ध में मत-भ्रांति बनी हुई है।

समाज का समाजशास्त्रीय अर्थ एवं परिभाषायें
(Sociological Meaning and Definitions of Society)

समाजशास्त्र में समाज शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बन्धों के ताने-बाने के लिये किया जाता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाज को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है—

(1) **मैकाइवर तथा पेज** (MacIver and Page) के कथनानुसार, "समाज सामाजिक सम्बन्धों का एक मकड़जाल है।"

(2) **रयूटर** (Ruter) के कथनानुसार, "समाज एक अमूर्त धारणा है जो एक समूह के सदस्यों के बीच पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों की सम्पूर्णता का बोध कराती है।"

(3) **क्यूबर** (Cubier) के कथनानुसार, "समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जो काफी समय से इकट्ठे रहने के कारण संगठित हो गये है और जो स्वयं को अन्य मानवीय इकाइयों से भिन्न समझते हैं।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मात्र व्यक्तियों का संकलन ही समाज नहीं है वरन् व्यक्ति के सामाजिक प्राणी होने के कारण जो परस्पर सम्बन्ध स्थापित होते हैं, उन सम्बन्धों की समष्टि जिस वृहद संगठन को जन्म देती है उसे ही समाजशास्त्रीय अर्थ में 'समाज' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, समाज के रूप में मानवीय सम्बन्धों की वह व्यवस्था स्पष्ट होती है जो उन सभी व्यक्तियों के बीच पाए जाते हैं जो कि समकालीन मानव समाज के सदस्य हैं। ये सामाजिक सम्बन्ध इतने अधिक व्यापक, सम्पूर्ण एवं जटिल होते हैं कि यदि एक विषय के रूप में (समाजशास्त्र के अंतर्गत) इनका क्रमबद्ध अध्ययन न किया जाये तो ये अत्यन्त दुरूह बने रहेंगे। इसलिए कहा जाता है कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का मकड़-जाल है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अन्योन्याश्रितता के सम्बन्धों से जुड़ा हुआ है। दूसरे शब्दों में, समाज मूर्त न होकर अमूर्त है। ई० बी० रयूटर (E. B. Reuter) के कथनानुसार, "जिस प्रकार जीवन एक वस्तु नहीं है वरन् जीवित रहने की एक प्रक्रिया है, उसी प्रकार समाज एक वस्तु नहीं वरन् सम्बन्ध स्थापित करने की एक प्रक्रिया है।"

'समाज' तथा 'एक समाज' में अंतर
(Differentiation between 'Society' and 'A Society')

'समाज' एवं 'एक समाज' में प्रमुख अन्तर निम्न प्रकार हैं—

(1) **आकार में अन्तर**—'समाज' एवं 'एक समाज' के आकार में अन्तर होता है। एक ओर जहाँ 'समाज' का स्वरूप—विस्तृत है, वहीं दूसरी ओर 'एक समाज' अपेक्षाकृत छोटा है। वास्तव में, 'एक समाज' 'समाज' का मात्र एक भाग होता है।

(2) **क्षेत्र में अन्तर**—'समाज' भूमण्डलीय स्तर पर अर्थात् सभी देशों के व्यक्तियों एवं उनके सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है अर्थात् इसका क्षेत्र विस्तार वैश्विक है और

Scanned with CamScanner

इसकी कोई भौगोलिक सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती, जबकि 'एक समाज' ऐसे लोगों का संग्रह है जो किसी निश्चित भू-भाग में निवास करता है तथा इसकी सीमायें सीमित हैं।

(3) **सम्बन्धों की प्रकृति में भिन्नता**—'समाज' मानव समाज के सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों से सम्बन्धित है, जबकि 'एक समाज' से तात्पर्य किसी विशेष समुदाय या समुदायों के अंतर्गत पाये जाने वाले सम्बन्धों के योग से है। साथ ही 'समाज' अमूर्त होता है, जबकि 'एक समाज' मूर्त होता है।

(4) **सांस्कृतिक अन्तर**—सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में 'समाज' बहु-सांस्कृतिक होता है। दूसरे शब्दों में, इसमें एक ही समय पर अनेक संस्कृतियाँ मौजूद होती हैं, जबकि 'एक समाज' में अधिकांशतया एक ही संस्कृति का बोलबाला होता है।

(5) **समानताओं एवं असमानताओं के स्तर पर अन्तर**—'समाज' के सदस्यों में व्यवहारों, मनोवृत्तियों एवं क्रियाओं में समानता एवं असमानता दोनों का समावेश होता है, जबकि 'एक समाज' के सदस्यों में समानता का अंश अधिक होता है।

समाजों का वर्गीकरण
(Classification of Societies)

समाजशास्त्रीय अर्थ में सामाजिक सम्बन्धों के ताने-बाने के रूप में समाज एक अमूर्त अवधारणा है, जो समाज का खण्डात्मक विभाजन न करके इसे एक सम्पूर्णता के रूप में व्यक्त करता है। यद्यपि इससे समाज के अविभाज्य होने का अहसास होता है, किन्तु विभिन्न कालों और विकास की विभिन्न अवस्थाओं में समाज के जो विभिन्न स्वरूप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं उनके आधार पर समाज को वर्गीकृत किया जा सकता है। इन्हीं आधारों पर मूर्धन्य समाजशास्त्रियों ने समाजों का वर्गीकरण विविध रूपों में किया है, प्रमुख विद्वानों द्वारा किए गए वर्गीकरण निम्न प्रकार हैं—

टॉनीज़ द्वारा वर्गीकरण
(Classification by Tonnies)

टॉनीज़ ने सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति के आधार पर समाज का निम्न दो श्रेणियों में विभाजन किया है—

(1) **गेमाइनशाफ्ट (Gemeinschaft) अर्थात् समूह-प्रधान समाज**—इस श्रेणी में टॉनीज ने औद्योगीकरण के पूर्व के समाजों को सम्मिलित किया है। इस प्रकार के समाज में व्यक्ति पर समूह का नियन्त्रण होता है। इन समाजों में व्यक्ति की स्थिति उसके समूह के अनुसार ही निश्चित होती है। भारतीय समाज की इसी प्रकार के समाज में गणना की जा सकती है क्योंकि भारतीय समाज में व्यक्ति की स्थिति उसकी जाति के अनुसार ही निश्चित की जाती है और जाति का व्यक्ति पर पूर्ण नियन्त्रण माना जाता है। इस प्रकार के समाज सभ्यता के आदिम युग में पाए जाते थे।

(2) **गैसेलशॉफ्ट (Gesellschaft) अर्थात् व्यक्ति-प्रधान समाज**—इस श्रेणी में टॉनीज़ ने औद्योगीकृत समाजों को रखा है। टॉनीज के अनुसार कुछ समाज ऐसे होते हैं जिनमें व्यक्तियों के गुणों और उसकी क्षमता के आधार पर व्यक्ति को विशेष महत्त्व दिया जाता है। समाज की सूक्ष्म तथा महत्त्वपूर्ण इकाई व्यक्ति ही होता है। इस प्रकार के समाजों में समाज की संरचना का आधार, व्यक्ति के गुण हैं। इस समाज में व्यक्तिवाद की भावना अधिक पायी जाती है। व्यक्ति अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए दूसरों का बड़े-से-बड़ा अहित करने को तैयार हो जाता है। व्यक्ति के अन्य व्यक्तियों के साथ जो भी सम्बन्ध होते हैं, वे किसी समझौते के परिणाम होते हैं और व्यक्ति अपने गुणों के कारण समूह पर नियन्त्रण रखता है। आधुनिक पूँजीवादी समाज व्यक्तिवादी समाज का ज्वलन्त उदाहरण है।

टॉनीज़ द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण की सबसे बड़ी कमी यह है कि दोनों समाजों की विशेषताओं को पूर्ण रूप से एक-दूसरे से भिन्न करना एक कठिन कार्य है।

स्पेन्सर द्वारा वर्गीकरण
(Classification by Spencer)

हरबर्ट स्पेन्सर ने समाज का वर्गीकरण श्रम-विभाजन, राजनीतिक संगठन, धार्मिक परम्परा तथा सामाजिक वर्गों के आधार पर किया है। वे समाज को चार श्रेणियों में विभाजित करते हैं—(1) सरल समाज, (2) मिश्रित समाज, (3) दोहरे मिश्रित समाज, एवं (4) तिहरे मिश्रित समाज।

स्पेन्सर प्रथम तीन श्रेणियों में आदिम समाजों का समावेश करते हैं। चौथी श्रेणी के समाज में इन्होंने प्राचीन मैक्सिको, सीरियाई साम्राज्य, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी तथा रूस जैसे समाजों को सम्मिलित किया है। स्पेन्सर पहली तीन श्रेणियों के स्पष्ट उदाहरण देकर उन्हें एक-दूसरे से पूरी तरह से अलग नहीं कर पाए, अतः वे पूर्ण रूप से समाजों का वर्गीकरण करने में सफल नहीं हुए।

दुर्खीम द्वारा वर्गीकरण
(Classification by Durkheim)

दुर्खीम ने समाजों का वर्गीकरण करते हुए स्पेन्सर के वर्गीकरण का ही आधार लिया है। दुर्खीम ने समाज को निम्न वर्गों में विभाजित किया है—

(1) **सरल समाज**—दुर्खीम का कहना है कि जो व्यक्ति घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हैं उनके समाज में श्रम-विभाजन का अधिक महत्त्व होता है। प्रत्येक को उसके श्रम के अनुसार उचित पारिश्रमिक मिल जाता है। ऐसे व्यक्तियों के समाज सरल समाज कहे जाते हैं। इस प्रकार के समाज में सामाजिक संरचना तथा राजनीतिक संगठन अत्यन्त सरल होते हैं।

(2) **सरल बहुखण्डीय समाज**—इस प्रकार के समाज जनजातियों में पाए जाते हैं।

(3) **सरल-मिश्रित बहुखण्डीय समाज**— इस प्रकार के समाज भी मुख्यतः जनजातियों में पाए जाते हैं।

(4) **मिश्रित बहुखण्डीय समाज**—इस प्रकार के समाजों में प्राचीन युग के समाजों की गणना की जा सकती है। समाजशास्त्रियों का कथन है कि इस प्रकार के समाज जर्मन जनजातियों में देखने को मिलते हैं।

दुर्खीम द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण की सबसे बड़ी कमी यह है कि इन्होंने स्पष्ट रूप में यह नहीं बताया कि आधुनिक समाज और विकासशील समाज किस श्रेणी में आते हैं।

Scanned with CamScanner